सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• कैलाश बिहारी सिंघल

सृजक-सृजन-समीक्षा

कैलाश बिहारी सिंघल

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,
इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

कैलाश बिहारी सिंघल का परिचय

नाम:- कैलाश बिहारी सिंघल

पिता:-श्री बिहारी लाल जी सिंघल

जन्म दिनांक:- 20 दिसम्बर 1956

पत्नी:- मनोरमा सिंघल

शिक्षा:- हायरसेकेंड्री

व्यवसाय:- कॉटन ब्रोकर्स (38 वर्षों से)

समूह संचालक:- अन्तरा शब्दशक्ति, काव्यप्रेमियों की महफ़िल

पद:- राष्ट्रीय सचिव, मातृभाषा उन्नयन संस्थान

सम्मान- अंतरा शब्दशक्ति सम्मान 3 फरवरी को

प्रकाशन- कुछ रचनाएँ लोकजंग अखबार में प्रकाशित हुई

विचार मंथन (साझाआलेख संकलन)

स्पंदन (साझा काव्य संकलन

विधा -गीत, सजल,तांका, हाइकु,विचार मंथन

आत्मकथ्य

मुझे बचपन से कविताओं से लगाव रहा,

पर दूसरे कवियों की रचनाएं बहुत सुनी जो अच्छी लगी और जिन रचनाओँ को सुनकर भाव जागृत हुवे, मां शारदा की कृपा से याद होती गई, यदा कदा दोस्तों की महफ़िल में सुनाता, खूब दाद मिलती, अच्छा

लगता था..!

जब व्हाट्सएप तकनीक आई तो साहित्य प्रेमियों को *"काव्यप्रेमियों की महफ़िल" समूह बनाकर जोड़ा...

उसी तारतम्य में श्रद्धेय प्रीति जी सुराना से संपर्क हुआ,

लेखन तो हमने कभी किया नही कॉपी पेस्ट करके अपने समूह में साहित्यिक आनंद लेते रहे...

जब प्रीति बहना ने *अन्तरा शब्दशक्ति परिवार* में मुझे जोड़ा तब से उनकी ही प्रेरणा से कुछ कुछ लिखने लगा...

अतः मेरे लिये यह समूह गुरुकुल जैसा हो गया...!

उद्देश्य:- मेरा मुख्य उद्देश्य है कि जो कवि दिवंगत हो गए या वृद्धावस्था के कारण मंचों पर अपनी कविताएं नही सुना सकते, हिन्दी साहित्य को कुछ ऐसा साहित्य दे गए जो आज भी प्रासंगिक है...

उन रचनाओँ को उनके ही नाम के साथ काव्य-मंचों पर जीवित रखना...

ताकि नवोदित रचनाकार कुछ ऐसा लिखें कि आने वाले समय में उनका लिखा साहित्य मेरे जैसा कोई और कैलाश उनकी रचनाओं को मंचों के माध्यम से जीवित रख सके...

साथ ही स्वान्तः सुखाय से आत्मीय शांति मिलती है...

काव्यपाठ का मानदेय कभी नही लिया....!

कैलाश बिहारी सिंघल

"सृजक का सृजन"

धूप..

धूप आती रही, धूप जाती रही..
प्रेम के रंग मन में समाते रहे,
जब छुपी चाँदनी, मेरे आगोश में..
अनकहे शब्द तन को जगाते रहे..!
धूप आती रही...!!

जब से नयनों की भाषा अबोली
हुई..
फिर भी नैनों ने नैनों से सब कह
दिया,
लब तो खामोश थे, थरथराये हुवे...
प्रेम के वो भी दीपक जलाते रहे...!
धूप आती रही...!!

एक खामोश हलचल बनी
ज़िन्दगी...
जब से आये हो जीवन की रसधार
में,
नेह के पत्र में जो कठिनतम थे
प्रश्न...
बिन पढ़े ही सरलतम बनाते रहे...!
धूप आती रही...!!

तन से तन का मिलन हो जरूरी
नही...
मन से मन का मिलन कोई कम
तो नही,
रात दिन के मिलन सा है, अपना
मिलन..
इक नया प्रेम जग को बताते
रहे...!
धूप आती रही...!!

धूप आती रही, धूप जाती रही...
प्रेम के रंग मन में समाते रहे,
जब छुपी चाँदनी मेरे आगोश में...
अनकहे शब्द तन को जगाते रहे..!
धूप आती रही...!!

मौसम बिता जाये रे..!

होली का ये मादक रंग अब...
मन में आग लगाये रे,
पिया मिलन की आस तन में...
सोया भाग जगाये रे..,
उदास तन है उदास मन है...
सखियाँ भी इतराये रे,
आजा साजन जल्दी आजा...
मौसम बिता जाये रे..!

जल के बिना ज्यों रिती गागर...
माली बिना ज्यों मधुबन है,
भ्रमर बिना जैसे हों कलियाँ...
फुल बिना ज्यों शबनम है,
मस्त बयारों का ये फ़ागुन...
बस तुझको ही चाहे रे,
आजा साजन जल्दी आजा...
मौसम बिता जाये रे...!

सास ननद देराणी जेठानी..
सब मिल बैठी रार करे,
नानो देवरियो भी चिढ़ावे..
नी होती सी बात करे,
सावन और भादव भी सुखा...
फागण भी शरमाये रे,
आजा साजन जल्दी आजा...
मौसम बिता जाये रे..!

रंगों के सतरंगी सपने...
दूर हुवे क्यूँ साजन से..?
पूछ रहा है व्याकुल सा मन...
सुनी हुई इन सांसन से,
सुध बुध भी भूली हूँ तन से...
अब तो रहा ना जाये रे,
आजा साजन जल्दी आजा...
मौसम बिता जाये रे...!

जब से तुम परदेस गये हो...
मन नही लगता आँगन में,
तन में तो बिजली सी कड़के...
अगन लगाती दामन में,
कब आओगे ये तो बता दो...
अँखियाँ जल बरसाये रे,
आजा साजन जल्दी आजा...
मौसम बिता जाये रे..!

नारी महिमा..

नारी तेरा रूप अलौकिक...
युग दृष्टा कहलाती हो,
दाता की भी माता बनकर...
भाग्य पर इठलाती हो...!

माता बनकर जन्म दिया तो...
कष्ट सहकर के पाला है,
बहना रूप में लाड़ किया तो...
बेटी बन के संभाला है,
पत्नी बनकर सहचर्या सब...
दुख दर्द सह जाती हो...,,
दाता की भी माता बनकर...
भाग्य पर इठलाती हो...!
नारी तेरा रूप अलौकिक...!

नव-दुर्गा का रूप तुम्हारा...
शक्ति रूप अवतारी हो,
नारी का सम्मान जो करता...
तुम उसकी भवतारी हो,
तप बल पर सावित्री बनकर
पति के प्राण बचाती हो...,,
दाता की भी माता बनकर...
तुम भाग्य पर इठलाती हो...!
नारी तेरा रूप अलौकिक...!

बन सीता वनवास निभाया...
राधा बन सिंदूर न पाया,
मीरा बन पति मान लिया तो...
पांचाली बन धर्म निभाया,
पत्थर की अहिल्या बनकर...
राम चरण रज पाती हो...,,
दाता की भी माता बनकर...
भाग्य पर इठलाती हो...!
नारी तेरा रूप अलौकिक...!

मौसम

देखो कोहरा छाया है।
प्रेम सन्देसा आया है।।

धुंध छाई मन आंगन।
तन भी तो भरमाया है।।

तुम आओ तो बात बने।
कुहासा क्यों सजाया है।।

ये मौसम क्यूँ सुहाना है।
घूँघट में कौन शरमाया है।।

खामोशी में ये कैसा शोर।
शायद दिल चटकाया है।।

रातों की अब क्या तलब।
चाँद दिन में जगमगाया है।।

सज़ल का वो प्यासा आंसू।
"केसू" की आंख से आया है।।

ताकां सप्तक

मैं गीत लिखुँ
पर कैसे लिखूंगा
मन के भाव
कागज़ पर लहू
के रंग में रँगे है।1।

गौरी के गाल
सियासत की चाल
जैसे लगते
पायल लगे जैसे
ज़ंजीर हो पैरों में।2।

अधरों पर
कुछ लिखूं तो कैसे
लाली लगती
सीमाओं पर खून
सेना का बहा जैसे।3।

मैं कैसे करूँ
प्रणय निवेदन
अभिसार में
आलिंगन के घेरे
लगते कैद जैसे।4।

ज़ुल्फ़ों पे लिखुँ
पर कैसे लिखूंगा
फंसी दिखती
भ्रष्टाचार की जुवें
ज़ुल्फ़ ए खम में हैं।5।

जब तलक
देश की सीमा पर
खून बहेगा
श्रृंगार शब्द कैसे
लिखे मेरी कलम।6।

मन लेता है
यह संकल्प मीत
पहले दूर
करूँ सीमा विवाद
फिर लिखूंगा गीत।7।

तांका सप्तक

अनुसुईया
की कठिन परीक्षा
त्रिदेव ने ली
पालने में सुला दी
पुरुष प्रधानता।1।

अग्नि परीक्षा
जब सीताजी ने दी
पुरषोत्तम
श्री राम कहलाये
पुरुष प्रधानता।2।

हर युग में
दांव पर लगी है
नारी अस्मिता
पांचाली लाचार थी
पुरुष प्रधानता।3।

कलयुग में
हर कदम पर
नारी परीक्षा
भोग वस्तु बनाई
पुरुष प्रधानता।4।

माँ की परीक्षा
बेटा परिणाम हो
तो माँ पास है
बेटी आये तो फैल
पुरुष प्रधानता।5।

युग बदला
तो सोच भी बदलो
कैसी परीक्षा
नारी को सम्मान दे
पुरुष प्रधानता।6।

नारी सम्मान
जिस घर में होता
इष्ट प्रसन्न
परीक्षा बन्द करें
पुरुष प्रधानता।7।

तांका सप्तक

कैसे हटेगें ?
कपट के गहने
तन पे सजी
संस्कारों की मिट्टी
गीली है अभी तक।1।

छल फरेब
संविधान बदले
क्यों बंधी है ?
न्याय तुला की आंख
में पट्टी अभी तक ?2।

जातिवाद से
नफरत फैली है
पूरे देश में
घृणा की राजनीति
क्यों छाई अभी तक ?3।

भूल गए क्यों
भगत की कुर्बानी
दो सौ वर्षों की
बेशर्म गुलामी तो
याद है अभी तक ?4।

खून के आंसू
रोती है प्रतिभाएं
राजनीति में
आरक्षण का जाल
क्यों बिछा अभी तक ?5।

जन गणना
जाती आधार न हो
क्यों ना सिखाया
भारतीय लिखना
जाती में अभी तक ?6।

जब तलक
आरक्षण की नीति
खत्म न होगी
द्वेष छल कपट
रहेगा तभी तक।7।

"सृजन की समीक्षा"

1.

आज के केंद्रीय रचनाकार आदरणीय कैलाश भाई साहब को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। अंतरा पर नित्य ही आप की रचनाओं को पढ़ते रहते हैं जैसा कि आपने लिखा कि आपको लिखना नहीं आता आपकी रचनाओं को पढ़कर तो ऐसा नहीं लगता ,..

आप की पहली रचना **धूप आती रही** बरबस इंदीवर जी की याद दिलाती है

मौसम बीता जाए रे होली की हंसी ठिठोली का सुंदर चित्रण

नारी महिमा समस्त नारी जाति के लिए आपके सुंदर विचार, परंतु नारी कभी अपने भाग्य पर इठलाती नहीं है , ऐसा मेरा सोचना है।

तांका बहुत ही **खूबसूरत और उद्देश्यपूर्ण पुरुष प्रधान समाज का नारी पर एकाधिकार का सुंदर चित्रण** आप की सभी रचनाएं उद्देश्यपूर्ण सीधी-सरल जैसा कि आपका व्यक्तित्व है । आत्मकथ्य में आपने लिखा महान साहित्यकारों व कवियों की रचनाएं समय समय पर याद की जाना चाहिए बहुत ही सुंदर विचार।

पुनः आपको अनंत शुभकामनाएं

कीर्ति प्रदीप वर्मा

2.

आज की उत्सवमूर्ति कैलाश दादा सिंघल को हार्दिक शुभेच्छा...

हमेशा आपकी रचनाओं में नवीनता और तांका विधा के दर्शन के साथ आपके अदभुत उद्देश्य को नमन है जिसमें आप साहित्य के रत्नाकर जो सशरीर तो समाज में नहीं रहें परन्तु उन्हें उनके सृजन के साथ जनमानस के बीच ही रखते है... बहुत ही प्रेरणास्पद है |

रचनाओं की समीक्षा क्रम में,

धूप

//नयनों की भाषा अबोली हुई,
फिर भी नैनों ने नैनों से कह दिया...//
सुन्दर वर्णन.... जहाँ भाव प्रधानता है वहाँ स्वीकार है प्रेम.....

मौसम बिता जाए रे...!

सुंदर गेय काव्य....
नवीन शब्दों का सुन्दर संयोजन

नारी महिमा...

बहुत सुन्दर गीत..
स्त्री के उत्तरदायित्वों और रुपों का वर्णन करती पंक्तियाँ...

मौसम

सहज ही स्वीकार पंक्तियाँ...

तांका सप्तक

पुरुष प्रधानता पर गहरा तंज है... आईना दिखाती रचना है...

तांका सप्तक

स्वराष्ट्र को पीड़ा प्रदान करने वाले कारकों पर गहरा प्रश्न दागती रचना... जिम्मेदारों के आखों पर अभी भी पट्टी होने से इस विश्वगुरु राष्ट्र की दुर्दशा हो रही है...

अन्ततः समस्त रचनाएं बेहतर से बेहतरीन की ओर बढ़ती व पाठकों को आगे पढ़ने को विवश करती है... अद्भुत योग....

माँ वाग्देवी सदा आप पर कृपा बरसाती रहें, यही कामना है दादा...
आपका आशीष व मार्गदर्शन सदा हमें मिलता रहें...

डॉ.अर्पण जैन 'अविचल'
हिन्दीग्राम, इंदौर

3.

कैलाश बिहारी सिंघल "केसू" जी को आज की उत्सव मूर्ति के रूप में शुभेच्छाएं। अपनी तांका विधा की रचनाओं के लिए मशहूर सिंघल जी का

अन्य विधाओं में भी अच्छा खासा दखल है, यह सुखकर बात है। सहज ,सरल शब्दों में बिना किसी शाब्दिक तामझाम के पाठकों तक अपनी बात पहुंचा लेते हैं सिंघल जी। कोई अतिरिक्त आग्रह अथवा दुराग्रह नहीं पालते। जैसा है, वैसा है के सिद्धांत को मानते हुए रचनाधर्मिता को निभाते जा रहे हैं, जो कि प्रशंसनीय है।
उन्हें बहुय बहुत **बधाई** और शुभकामनाएं।

सत्यप्रसन्न

4.

आदरणीय कैलाश दादा सादर प्रणाम,
बहुत-बहुत बधाई सप्ताह का कवि विशेषण में प्रस्तुत होने के लिए,,,,, यह मेरा सौभाग्य कि मैं आप से जुड़ा हुआ हूं,,, आप से व्यक्तिगत मिला आपके साथ बैठकर कविताएं पढ़ने सुनने का मौका भी मिला है मुझे,,,,, साहित्य के प्रति इतनी दीवानगी विरले ही देखने को मिलती है,,,, आपको एक चलता रहता कवि सम्मेलन कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी,,,, **आपकी आज प्रस्तुत समस्त रचनाएं बहुत ही उत्तम है, आपके व्यक्तित्व का आईना है,,,,**, सृजन के प्रति आपकी कर्मठता को प्रदर्शित करती हुई है,,,, इससे ज्यादा और कुछ मैं कह नहीं सकता,,,,,,, बस शानदार,,,,,, मां शारदा की कृपा यूं ही आप पर बनी रहे,,, आप सदैव स्वस्थ रहे,,, और यूं ही हमारा मार्गदर्शन करते रहें,,,,,आपका सदैव स्नैहपात्र

जयकृष्ण चांड़क 'जय'
हरदा म प्र

5.

आज की केन्द्रीय रचनाकार आदरणीय कैलाश भाई जी का
हार्दिक **अभिनंदन**

आपका परिचय और आत्मकथ्य पढा। पुराने कवियों की रचनाएं भी हम सब मिलकर मंच पर प्रस्तुत करें,यह विचार प्रंशसनीय है। बेहद प्रभावशाली व्यक्तित्व है आपका। आपकी सभी रचनाएं सीधे मन को छूती है विशेष रूप से **धूप -आपकी दार्शनिकता को दर्शाती है।**

मौसम बीता जाए- अति सुन्दर गीत

नारी महिमा-में सभी नारियों की महानता को दर्शाया

मौसम भी अति सुन्दर

ताकां सप्तक के तो आप धुरंधर हैं

सभी रचनाओं में आपने अपनी संवेदनाओं को बहुत खूबसूरती के साथ उकेरा है। आपकी रचनाएं पढना सुखद एहसास है | आपको बहुत शुभकामनाएं । आप की लेखनी अनवरत चलती रहे।

चंचल पाहुजा,दिल्ली

6..

आदरणीय सिंघल जी सप्ताह के कवि विशेषांक इस सप्ताह आपके नाम रहा । तह-ऐ-दिल से मुबारक आपको । आपको पढ़कर उच्च कोटि के रचनाकार को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। धारा प्रवाह लेखन ग़जब का आदरणीय आपका । उपमा का सुँदर समायोजन आपके काव्य में देखने मिला। आपको पढ़कर हमे भी बहुत कुछ सीखने मिलेगा यह मेरा मानना है । इतने उच्च कोटि के कलमकार के बारे में कुछ अधिक कहा नही जा सकता । बस यह पँक्तियाँ ही बहुत है आपकी शान में **:-**

कलम जब चलती है हाल बयां करती है ।
उजालों को भी रोशन किया करती है ।
डूबते चलें आप मे डूबते चलें।
"निश्चल" कुछ बुझते चले कुछ सूझते चले।

विवेक दुबे"निश्चल"@..
रायसेन (म.प्र.)

7.

अन्तराशब्दशक्ति प्रकाशन: आदरणीय कैलाश भैय्या, आपका जीवन परिचय, आत्मकथ्य, उद्देश्य और रचनाएँ सभी के लिए प्रेरक है। मेरा सौभाग्य है कि आपकी लेखनी की शुरुआत का निमित्त मैं बनी। अन्तरा-शब्दशक्ति का होना इसी में सार्थक है जब रचनाकार को लगे कि यह परिवार सचमुच उसका अपना है इसलिए सभी एक दूसरे का हाथ थामे बढ़ते चले गए। 2 वर्ष का ये सफ़र मेरे लिए उत्तरदायित्व के साथ भी सुखद और सफल रहा। आप के संकलनों और पठन पाठन की कायल तो मैं हूँ ही पर आपकी लेखनी के समक्ष बहुत छोटी भी हूँ।

धूप और **मौसम बीता जाये रे**,..के माध्यम से गरिमायुक्त श्रृंगार गीत की प्रस्तुति के साथ-साथ नारी महिमा जैसा सशक्त लेखन बहुत प्रभावी है।

सजल का वो प्यासा आंसू बहुत मर्मस्पर्शी रचना बन पड़ी है।

तांका और हाइकु जैसी विधाओं में आपने बहुत अच्छी पकड़ बनाई है। तांका में श्रृंगार के अलावा, पुरुष प्रधानता जैसे तीखे सवाल और देश और सामाजिक व्यवस्थाओं पर अभी तक?? जैसे सवाल उठाना वास्तव में उस रचनाकार के लिए कमाल की बात है जिसे लेखन शुरू किए ही लगभग साल भर हुआ हो। इसके लिए आप **बधाई के पात्र हैं।**

कुछ बातों की ओर ध्यान दिलाना भी अपना कर्तव्य समझती हूं,..

1.वर्तनी की त्रुटियां ध्यान देने योग्य है,... 2.तांका,हाइकु, पिरामिड आदि में कोई भी पंक्ति से, में, के जैसे संयोजकों के साथ शुरू नहीं कि जाती क्योंकि इसे एक वाक्य को तोड़कर दो पंक्तियाँ बनाई गई है ये माना जाता है। अतः कुछ तांको में संशोधन अपेक्षित है,.. आपका लेखन सतत चलता रहे और सौंदर्य और भाव पक्ष की सुदृढ होता रहे यही कामना करती हूं।

प्रीति सुराना, वारासिवनी

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.) हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com